पुरुष सूक्त

इन पाठों के बारे में

स्रोत — हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण — रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

पुरुष सूक्त

प्रकार	सूक्त
देवता	भगवान विष्णु
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	वैदिक
स्रोत	संस्कृत विकिस्रोत (sa.wikisource.org) — ऋग्वेदः सूक्तं १०.९०, revision 336240 (plain text block)
आभार	पाठ: संस्कृत विकिस्रोत योगदानकर्ता (CC BY-SA 4.0), "ऋग्वेदः सूक्तं १०.९०" (संशोधन 336240)। मिलान, सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Text in the public domain (Vedic). Transcription from Sanskrit Wikisource, CC BY-SA 4.0.

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।

sahasraśīrṣā puruṣaḥ sahasrākṣaḥ sahasrapāt |

स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥

sa bhūmiṃ viśvato vṛtvātyatiṣṭhaddaśāṅgulam ||1||

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम् ।

puruṣa evedaṃ sarvaṃ yadbhūtaṃ yacca bhavyam |

उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥

utāmṛtatvasyeśāno yadannenātirohati ||2||

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।

etāvānasya mahimāto jyāyām□śca pūruṣaḥ |

पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥

pādo'sya viśvā bhūtāni tripādasyāmṛtaṃ divi ||3||

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।

tripādūrdhva udaitpuruṣaḥ pādo'syehābhavatpunaḥ |

ततो विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥४॥

tato viṣvaṅvyakrāmatsāśanānaśane abhi ||4||

तस्माद्विराळजायत विराजो अधि पूरुषः ।

tasmādvirāḷajāyata virājo adhi pūruṣaḥ |

स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥५॥

sa jāto atyaricyata paścādbhūmimatho puraḥ ||5||

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।

yatpuruṣeṇa haviṣā devā yajñamatanvata |

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥६॥

vasanto asyāsīdājyaṃ grīṣma idhmaḥ śaraddhaviḥ ||6||

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः ।

taṃ yajñaṃ barhiṣi praukṣanpuruṣaṃ jātamagrataḥ |

तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥७॥

tena devā ayajanta sādhyā ṛṣayaśca ye ||7||

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।

tasmādyajñātsarvahutaḥ sambhṛtaṃ pṛṣadājyam |

पशून् ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान्ग्राम्याश्च ये ॥८॥

paśūn tāṃ॒ścakre vāyavyānāraṇyāngrāmyāśca ye ||8||

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।

tasmādyajñātsarvahuta ṛcaḥ sāmāni jajñire |

छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥९॥

chandāṃsi jajñire tasmādyajustasmādajāyata ||9||

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।

tasmādaśvā ajāyanta ye ke cobhayādataḥ |

गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥१०॥

gāvo ha jajñire tasmāttasmājjātā ajāvayaḥ ||10||

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।

yatpuruṣaṃ vyadadhuḥ katidhā vyakalpayan |

मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते ॥११॥

mukhaṃ kimasya kau bāhū kā ūrū pādā ucyete ||11||

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।

brāhmaṇo'sya mukhamāsīdbāhū rājanyaḥ kṛtaḥ |

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥१२॥

ūrū tadasya yadvaiśyaḥ padbhyāṃ śūdro ajāyata ||12||

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।

candramā manaso jātaścakṣoḥ sūryo ajāyata |

मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ॥१३॥

mukhādindraścāgniśca prāṇādvāyurajāyata ||13||

नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।

nābhyā āsīdantarikṣaṃ śīrṣṇo dyauḥ samavartata |

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन् ॥१४॥

padbhyāṃ bhūmirdiśaḥ śrotrāttathā lokāṃ॒ akalpayan ||14||

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।

saptāsyāsanparidhayastriḥ sapta samidhaḥ kṛtāḥ |

देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम् ॥१५॥

devā yadyajñaṃ tanvānā abadhnanpuruṣaṃ paśum ||15||

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।

yajñena yajñamayajanta devāstāni dharmāṇi prathamānyāsan |

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥१६॥

te ha nākaṃ mahimānaḥ sacanta yatra pūrve sādhyāḥ santi devāḥ ||16||

अर्थ

संक्षिप्त भावार्थ, अनुवाद नहीं। सहस्र सिर, नेत्र और चरणों वाला पुरुष पृथ्वी को सब ओर से व्याप्त कर उससे भी ऊपर है। जो हुआ है और जो होगा, सब वही पुरुष है; उसका एक पाद यह दृश्य जगत् है, तीन पाद अमृत ऊपर हैं। उससे विराट् हुआ; देवों ने पुरुष को हवि बनाकर जो यज्ञ किया उससे ऋतुएँ, ऋचा-साम-यजुः और छन्द, घोड़े-गौ-अजावि और चार वर्ण उत्पन्न हुए; मन से चन्द्र, नेत्र से सूर्य, मुख से इन्द्र-अग्नि, प्राण से वायु, सिर से द्युलोक और चरणों से भूमि। देवों ने यज्ञ से यज्ञ का यजन किया; ये ही प्रथम धर्म थे।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।